प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक,
हिन्दी विभाग, एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद।

'शरणदाता' शीर्षक कहानी की विशेषताओं का उल्लेख

'शरणदाता' शीर्षक कहानी देश की आजादी के समय दो देशों के विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित अज्ञेय की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है। कथा साहित्य एवं काव्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के वाहक अज्ञेय हिन्दी कथा-साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर थे। काव्य में जहाँ इन्होंने प्रयोगवाद का प्रवर्तन किया वहीं कथा साहित्य में समष्टि के साथ व्यष्टि को प्रधानता दी साथ ही मनोविज्ञान एवं विश्लेषण का समावेश किया। अज्ञेय ने अनेक कहानियां ~~लिखी~~ लिखीं जो विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल - आदि में संगृहीत हैं। इसी प्रकार उन्होंने अनेक उपन्यास एवं समृद्ध काव्य साहित्य का भी सृजन किया। पत्रकारिता और निबंधलेखन के क्षेत्र में आपने अपनी छाप छोड़ी। समग्रतः हम कह सकते हैं कि अज्ञेय हिन्दी साहित्य के विलक्षण प्रतिभाशाली साहित्यकारों में से एक थे।

प्रस्तुत कहानी देश के विभाजन के समय भड़क उठे साम्प्रदायिक दंगों की विद्रूपता को रेखांकित करती है। देविन्दरलाल लाहौर के जाने-माने निवासी थे। यहां हिन्दू-मुसलमान साथ-साथ रहते थे, किन्तु जब देश का विभाजन हो गया तो दोनों सम्प्रदाय के लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये। लाहौर मुस्लिम बहुल शहर था जहाँ हिन्दुओं का रहना धीरे-धीरे दुष्कर एवं जानलेवा होने लगा। चारों ओर दंगे हो रहे थे। लोग मारे जा रहे थे। सड़कों पर पड़ी लाशें सड़ने लगी थी कोई उनका अंतिम संस्कार करने वाला नहीं था। हिन्दू धीरे-धीरे वहाँ से भारत की ओर पलायन कर रहे थे।

देविन्दरलाल का मन लाहौर छोड़ना नहीं चाहता था, किन्तु परिस्थितियाँ क्रमशः विपरीत होती जा रही थी। उनके मित्र रफ़ीकुद्दीन उन्हें हर हाल में यहीं रखना चाह रहे थे। उन्होंने देविन्दरलाल को पूर्णतः आश्वस्त कर दिया कि यहां उन्हें उनके रहते कोई खतरा नहीं है। रफ़ीकुद्दीन साहब की सोच थी कि बहुसंख्यकों को हर हाल में अल्पसंख्यकों की रक्षा करनी चाहिए। इसी आधार वाक्य से प्रेरित होकर उन्होंने अपने मित्र को लाहौर छोड़ने से रोक लिया। किन्तु परिस्थितियाँ खराब होती जा रही थी। जैसे ही रफ़ीक को उस मुहल्ले में भी दंगाइयों के आने की खबर लगी, उन्होंने देविन्दरलाल को अपने घर में पनाह दे दी। विषम स्थितियों में भी देविन्दरलाल स्वयं को सुरक्षित अनुभव कर रहे थे। किन्तु रफ़ीकुद्दीन पर उनके समाज का दबाव बढ़ता जा रहा था। अतः उन्होंने देविन्दरलाल को अपने घर से हटाकर अपने खास मित्र के घर में रखवा दिया। वहाँ अकेली कोठरी में इनका समय मुश्किल से कट रहा था। रात के भोजन में उन्हें विष दे दिया गया। किन्तु उस घर की बेटी ज़ेबुन्निसा ने लिखकर एक कागज रख दिया कि खाना कुत्ते को खिलाकर खाइएगा। इस के कारण उनकी जान बच गयी और वहाँ से किसी तरह भागकर भारतीय सीमा में पहुँच गये। अब वो सुरक्षित थे। देविन्दरलाल ने महीने भर बाद आकाशवाणी दिल्ली से अपने मित्रों को अपनी सलामती का सन्देश दिया। इसके बाद उन्हें ज़ेबुन्निसा का एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उनके साथ हुए षड्यंत्र के लिए माफ़ी माँगी गयी थी तथा आग्रह किया गया था कि किसी मज़लूम अल्पसंख्यक की जान उसी तरह बचाइएगा जिस तरह उसने उनकी